नवभारत
www.navbharatlive.com

उपलब्धि एफिल टॉवर से बड़ा इंजीनियरिंग मार्वल, 19 को पीएम मोदी करेंगे उद्घाटन

सबसे ऊंचे रेल ब्रिज पर दौड़ेंगी भारतीय ट्रेनें

■ मुंबई, नवभारत न्यूज नेटवर्क. रेल-रोड इंफ्रास्ट्रक्चर के मामले में भारत नित नई ऊंचाइयां छू रहा है. समुद्र पर देश के सबसे लंबे मुंबई ट्रांसहार्बर लिंक रोड (एमटीएचएल) ब्रिज बनने के बाद अब चिनाब नदी पर बने दुनिया के सबसे ऊंचे सिंगल आर्च रेलवे ब्रिज पर भारतीय ट्रेनें दौड़ने वाली हैं. जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले के कौरी गांव के पास चिनाब नदी पर बना यह पुल दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल है. यह पुल चिनाब नदी के तल से 359 मीटर है, जो एफिल टॉवर से 35 मीटर ऊंचा है. इंजीनियरिंग का नया मार्वल कहे जाने वाले इस रेल ब्रिज की लंबाई 1315 मीटर है.1315 मीटर लंबाई वाले दुनिया के सबसे ऊंचे चिनाब रेलवे पुल की सबसे बड़ी खासियत है कि इसके निर्माण में ना तो नदी से कोई छेड़छाड़ की गई है और ना ही उसमें कोई पिलर खड़ा किया किया है. नदी के दोनों किनारों पर आर्च यानी मेहराब तकनीक का इस्तेमाल किया गया है. स्टील और कंक्रीट से तैयार स्कूल के निर्माण में 29 हज़ार मीट्रिक टन स्टील का उपयोग किया गया है. पुल के लिए 17 स्पैन तैयार किए गए हैं, जबकि इसमें 6 लाख से ज्यादा बोल्ट लगाए गए हैं.

खूबसूरती-मजबूती में बेमिसाल

यह पुल जहां एक तरफ भारतीय इंजीनियर्स के कौशल-तकनीक और मजबूती का बेजोड़ नमूना है वहीं खूबसूरती के मामले में भी बेमिसाल है. आर्च यानी मेहराब तकनीक पर तैयार यह पुल पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होगा, जो देश में रेलवे परिदृश्य को बदल देगा. हालांकि1486 करोड़ रुपये की लागत से बनाए गए इस बेमिसाल रेलवे पुल के निर्माण को मंजूरी 22 साल पहले 2003 में तत्कालीन अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने दी थी. अब प्रधानमंत्री मोदी के हाथों 19 अप्रैल से इस पुल पर वंदे भारत सहित अन्य ट्रेनों का सफर शुरू होगा. कुल मिलाकर यह ब्रिज जम्मू-कश्मीर के सामाजिक, आर्थिक विकास में बड़े पुल का काम करेगा.

देश के लिए गौरव: गिरीश

कोंकण रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी गिरीश करंदीकर के अनुसार भारतीय रेल को नई पहचान देने वाले इस पुल का काम बहुत चुनौतीपूर्ण था. ब्रिज पर ट्रेनों का ट्रायल रन और सेफ्टी कमिश्नर का क्लीयरेंस पहले ही मिल चुका है. चिनाब नदी पर बनाया गया पुल न सिर्फ रेलवे के लिए बड़ी उपलब्धि है, बल्कि समूचे देश के लिए भी गर्व और गौरव का सबब रहेगा.
एफकॉन्स के उप प्रबंध निदेशक गिरिधर राजगोपालन के अनुसार भारतीय रेलवे में पहली बार दुनिया की सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरिंग का इस्तेमाल हुआ है. पहली बार चिनाब ब्रिज के वायडक्ट हिस्से के डेक लॉन्चिंग के लिए ट्रांजिशन कर्व और अनुदैर्ध्य ढाल पर लॉन्चिंग की गई. आमतौर पर, पुलों का निर्माण एक समान त्रिज्या वाले सीधे या घुमावदार प्लेटफ़ॉर्म पर वृद्धिशील रूप से किया जाता है. खराब मौसम और तूफानी हवा की स्थिति में लॉन्चिंग गतिविधियों को अंजाम देना बेहद चुनौतीपूर्ण था.

दुनिया में भारत को मिलेगी अलग पहचान

- चिनाब रेलवे ब्रिज की लाइफ तकरीबन सवा सौ साल की होगी. तेज तूफान-भूकंप और 30 किलो विस्फोटक का इस पर कोई असर नहीं होगा.
- दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे पुल पर ट्रेनें सौ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकेंगी. यह जम्मू-कश्मीर राज्य में पर्यटन का एक नया केंद्र भी बन सकता है, यही वजह है कि पुल को नजदीक से देखने के लिए अलग से व्यू प्वाइंट भी बनाया गया है.
- इसके साथ ही पुल पर रेलवे ट्रैक के अगल-बगल काफी जगह छोड़ी गई है. पुल के नजदीक एक हेलीपैड भी तैयार कराया गया है. पुल पर बने सिंगल लाइन के रेल ट्रैक से जब बादलों और बर्फबारी के बीच ट्रेनें गुजरेंगी, तो चिनाब ब्रिज समूची दुनिया में भारत को अलग पहचान दिलाएगा.

ट्रेनें चलाने तैयारियां पूरी : सुतार

रेलवे बोर्ड के सूचना जनसंपर्क विभाग के निदेशक शिवाजी सुतार के अनुसार दुनिया के इस सबसे ऊंचे और उम्दा रेल ब्रिज पर ट्रेनें चलाने की सभी तैयारियां कर ली गई हैं. चिनाब रेलवे पुल पर ट्रेनों का संचालन शुरू होने के बाद कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरा भारत रेल मार्ग से भी आपस में जुड़ जाएगा.

Mumbai Edition
Apr 04, 2025 Page No. 10
Powered by: navbharatlive.com